

विज्ञान दिवस पर शिक्षकों और छात्रों के लिए फ़ोल्डस्कोप कार्यशाला का आयोजन



महासमुंद ट्रेक सीजी गौरव चंद्राकर/शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय महासमुंद में जैव प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार एवं बायोटेक्नोलॉजी कंसोसिया इंडिया लिमिटेड न्यू दिल्ली के द्वारा छत्तीसगढ़ के आकांक्षी जिले राजनांदगांव, महासमुंद, दत्तेवाड़ा कांकेर, बलरामपुर, नारायणपुर, छत्तीसगढ़ के शिक्षकों और छात्रों के लिए फ़ोल्डस्कोप कार्यशाला का आयोजन प्राचार्य डॉ शीलभद्र कुमार के मार्गदर्शन में दिनांक 28 फ़रवरी विज्ञान दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के कुलपति प्रो केसरी लाल वर्मा, कलेक्टर महासमुंद श्री निलेश कुमार क्षीरसागर विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रोफेसर केशव कांत साहू बायोटेक्नोलॉजी विभागाध्यक्ष पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय एवं बीसीआईएल के हेड सेक्रेटरी विनोद कुमार थे। कुलपति प्रोफेसर केसरी लाल वर्मा ने अपने उद्बोधन में स्कूल के छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्हें वर्तमान में उपलब्ध सुविधाओं को सही तरह से उपयोग कर सकारात्मक विचार के साथ अपने कार्य क्षेत्र में विशेष कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए। मचेवा ग्राम एवं दूरस्थ ग्रामीण परिवेश से आ रहे नियमित छात्र छात्राओं का हौसला बढ़ाया। कलेक्टर महासमुंद श्री निलेश कुमार क्षीरसागर द्वारा उद्बोधन में छात्राओं को अपने जीवन में उत्सुक एवं जिज्ञासु बनने के लिए प्रेरित किया जिससे वह कोई भी

कार्य को उत्सुकता पूर्वक कर सकें और उसमें सफलता प्राप्त करें साथ ही महाविद्यालय को बधाई दी महासमुंद जिले में इस प्रकार का स्कूल के बच्चों के लिए कार्य आयोजित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ केशव कांत साहू ने महाविद्यालय को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी एवं आने वाले प्रशिक्षण शाला में महाविद्यालय की छात्राओं की भूमिका और बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। बीसीआईएल के मैनेजर श्री विनोद कुमार एवं उनके टीम को बधाई दी।

बीसीआईएल के मैनेजर श्री विनोद कुमार ने अपने वक्तव्य में डॉक्टर मनु प्रकाश फ़ोल्ड स्कोप के जनक भारत सरकार की पहल के प्रमुख उद्देश्य बताए जिसमें प्रमुख रूप से दूरस्थ अविकसित ग्रामीण परिवेश में मौजूद छात्र-छात्राओं तक विज्ञान के कम लागत इस्तेमाल में आसान आविष्कारों द्वारा बालिकाओं एवं युवाओं में विज्ञान के प्रचार प्रसार की इच्छा जताई। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर सरस्वती वर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम समन्वयक डॉ स्वेतलाना नागल ने प्रस्तुत किया इस कार्यशाला के द्वितीय सत्र में देशभर के प्रसिद्ध संस्थानों से पधारे 10 ट्रेनर्स श्री विनोद कुमार, बीसीआईएल 2. सुश्री शर्ली चार्ल्स, बीसीआईएल डॉ अरोकियासामी अरुलानंदु इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायोटेक्नोलॉजी, नई दिल्ली, सुश्री अक्षता नायक, सिटीजन साइंस फेलो, अर्थवॉच इंडिया, सुश्री सुजाता अधाना, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई

दिल्ली, सुश्री सोनोली कदम, श्री मो. पंडियाराजन,, ईडन साइंस क्लब, मदुरै, डॉ नागार्जुन विजय, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (आईआईएसईआर), भोपाल, डॉ अरुण देव शर्मा, लायलपुर खालसा कॉलेज जालंधर. ने महासमुंद के विभिन्न शासकीय स्कूलों से पधारे चार सौ छात्राओं को निशुल्क फ़ोल्डस्कोप उपयोग करने की जानकारी साझा की इसके अलावा आकांक्षी जिलों से पधारे 40 टीचरों को विशेष किट प्रदान की गई जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने जिले और स्थानों पर जाकर विज्ञान के प्रचार प्रसार में सहयोग प्रदान करना था। इस कार्यक्रम के अंत में समस्त प्रतिभागी टीचरों को जैव प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। महासमुंद जिले से पधारे छात्र छात्राओं ने तालाब के पानी में शैवालों, फ़ोटोजोआ अध्ययन, सड़े टमाटर से राइजोपस, एसपर जिलस कवक, पत्तियों में मौजूद स्टोमेटा, जड़ों की संरचना, जू आदि का फ़ोल्डस्कोप से अध्ययन करना सीखा। महासमुंद जिले से इस कार्यशाला में 4 शिक्षकों का नाम कलेक्टर द्वारा मनोनीत किया गया था जिसमें स्वामी ना आत्मानंद इंग्लिश मध्यम स्कूल श्री विकास यादव आशु भाई ओझा हायर सेकेंडरी स्कूल महासमुंद से श्रीमती भारती यादव गवर्नमेंट हाई स्कूल लाफिन्ग खुर्द से प्रियंका चंद्राकर एवं स्वामी आत्मानंद हिंदी मध्यम स्कूल से श्रीमती सुधा साहू को जैवप्रौद्योगिकी विभाग से सर्टिफिकेट प्रदान किया गया इसके अलावा इस कार्यशाला में शामिल महासमुंद के 350 छात्रों को फ़ोल्डस्कोप माइक्रोस्कोप की डीलक्स किट निशुल्क प्रदान की गई। प्रशिक्षण के प्रथम चरण में पेपर से फ़ोल्डस्कोप तैयार करना सिखाया गया तथा द्वितीय चरण में तालाब के पानी मिट्टी पत्तियों पर मौजूद सूक्ष्मजीवों एवं पादप कोशिका का अध्ययन करना सिखाया गया इस कार्यशाला में उपस्थित स्कूल के छात्र छात्राओं ने बड़ चढ़कर हिस्सा लिया एवं उत्साह पूर्वक इस कार्यशाला में सहभागिता दी।

पत्रिका

► रविवि में विज्ञान सर्वत्र पूज्यते उत्सव 22 से

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत 22 से 28 फरवरी तक विज्ञान सर्वत्र पूज्यते: कार्यक्रम होगा। यह आयोजन एक साथ देश के 75 जगहों में आयोजित किया जा रहा है। छत्तीसगढ़ में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को नोडल एजेंसी बनाया गया है। रायपुर में यह कार्यक्रम पं. दीनदयाल उपाध्याय आडिटोरियम, विज्ञान महाविद्यालय परिसर में होगा। कुलसचिव डॉ. गिरीशकांत पांडेय ने बताया कि उत्सव में ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों के लोकप्रिय व्याख्यान, एक्सपो में विज्ञान प्रसार द्वारा तैयार पोस्टरों का प्रदर्शन, पुस्तक मेला, यंत्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का आयोजन होगा।



डायबिटीज से ✓

बचाव पर मंथन

रायपुर @ पत्रिका. रविवि में डायबिटीज मैनेजमेंट पर लेक्चर हुआ। डॉ. यूएस महादेव राव ने जटिलताओं को रोकने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ाने में कुशल मधुमेह प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया। वक्ता ने जीवनशैली में बदलाव, आहार के पैटर्न, शारीरिक निष्क्रियता और शरीर के वजन में वृद्धि को मधुमेह के लिए भारतीयों की उच्च संवेदनशीलता में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों के रूप में पहचाना।

Intl e-conference concludes at PRSU

■ Staff Reporter

RAIPUR, Jan 9

THE two-daylong international e-conference on 'Recent Advances in Biological Sciences & Opportunities in Entrepreneurship' concluded on Saturday in Pt Ravishankar Shukla University (PRSU) Raipur.

This event was jointly organized by the university's Biotechnology Department, its Alumni Association with Pt Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences & AYUSH University, Raipur.

On the conference's last day, Dr Harsh Bais from Delware Biotech USA, Dr Sudarshan Singh from Thailand, Dr J R Kanwar from Deakin University Australia, Dr Smita Sahu from Amity University Noida and Dr A M Deshmukh from Microbiologists Society of India delivered the lectures on cancer stem cell technique for the treatment of cancer, microbial solubilisation of metals from e-waste, research & innovation, patents and commercialisation.

The event provided an opportunity to participating young scientists to interact with distinguished scientists and motivated them for future research.

In valedictory function, PRSU vice chancellor professor KL Verma, vice chancellor of Pt

Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences & AYUSH University, Raipur professor AK Chandrakar, PRSU registrar Dr Girishkant Pandey, registrar of Pt Deendayal Upadhyay Memorial Health Sciences & AYUSH University Dr Rajesh Hishikar and others were present.

Meanwhile, the professor S K Jadhav announced the names of the participants who got the best paper presentation awards in different categories.

Namely, the under the various theme participants were awarded best paper presentation from across India including Anuj Rohati, Department of Biotechnology, National Institute of Technology, Raipur (CG); VS Jadhe from Department of Biochemistry, Science & Arts College, Wardha (Maharashtra); Paramita Das from Krupanidhi College of Pharmacy, Bangalore and Mumtaz Ahmed, Choudhary Charan Singh University, Meerut (UP).

A total of 500 candidates, including participants from China, Israel and other countries, registered for the conference. Of registered candidates, 400 participated in the event and over 200 participants presented their research papers. The conference consisted of 14 different research themes.

नईदुनिया

पृष्ठ सं. ११३३

'विज्ञान सर्वत्र पूज्यते' उत्सव शुरू

रायपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। पं. वीनय्याल उपाध्याय सभागार रायपुर में मंगलवार को विज्ञान सर्वत्र पूज्यते उत्सव की शुरुआत हुई। पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ राज्यपाल अनुसुइया उदके ने किया। वहीं आज से सात दिनों देश भर से आए विशेषज्ञ विज्ञान पर अपने व्याख्यान देंगे।

राज्यपाल उदके ने अपने उद्बोधन में विज्ञान से विकास के पथ को अवगत कराते हुए प्रदेश में शोध को बढ़ावा देने की बात कही। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रगान और कुलगीत से हुई। स्कूल आफ स्टडीज इन केमिस्ट्री प्रोफेसर डा. एमके वेव ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों के बारे में बताया। बता दें कि विज्ञान सर्वत्र पूज्यते उत्सव भारतीय स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ आजादी का अमृत महोत्सव का जश्न मनाते हुए मनाया जा रहा है। राज्य समेत देश भर के 75 स्थानों में एक साथ यह आयोजन किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर इसकी



सभा को संबोधित करती राज्यपाल अनुसुइया उदके। ● नईदुनिया

आज विज्ञान के इतिहास पर होगा व्याख्यान

आडिटोरियम में 23 फरवरी यानी आज सुबह 11 बजे से विज्ञान के इतिहास पर व्याख्यान होगा। इसमें सीएसआईआर भीषाल के विज्ञानी डा. गौरव कुमार गुप्ता विज्ञान के इतिहास की जानकारी देंगे। अशोक विश्वविद्यालय सोनीपठ के प्रो. एलरस शशिधर पर्यावरण, स्वास्थ्य और खानपान पर व्याख्यान देंगे।

शुरुआत नई दिल्ली मंगलवार को चोपड़ा रीन बजे की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री डा. जितेंद्र सिंह,

रविवि में 59 छात्रों को मिलेंगे गोल्ड मेडल

इधर रविशंकर विवि के विभिन्न विभागों के मेरिट छात्रों की सूची जारी की है। 59 गोल्ड मेडलिस्टों की भी सूची जारी कर दी है। बता दें कि विवि में पिछले दो वर्षों से दीक्षांत समारोह नहीं हुआ है। इस बार भी जनवरी में होने वाला दीक्षांत कोरोना की वजह से टला। दीक्षांत समारोह की रूपरेखा तैयार की जा रही है।

संस्कृति मंत्रालय के जी किशन रेड्डी ने किया। रविवि के कुलपति प्रो. केएल वर्मा, कुलसचिव डा. गिरीशकरंत पांडेय मौजूद थे।

✓ मधुमेह से बचने के लिए पोषक आहार-व्यायाम पर जोर

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में जनसंपर्क केंद्र और जैव प्रौद्योगिकी अध्ययनशाला की ओर से मधुमेह के प्रबंधन में पोषण चुनौतियां विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता डा. यूएस महादेव राय ने अपने व्याख्यान की शुरुआत छात्रों को मधुमेह रोग के प्रकार, कारण और प्रसार के परिचय अवलोकन के साथ किया। इन्होंने कहा कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए मधुमेह प्रबंधन करना बहुत जरूरी है। मधुमेह की बीमारी का मुख्य कारण जीवन शैली में बदलाव, खान-पान, वजन वृद्धि, शारीरिक मेहनत यानी योग-व्यायाम न करना है। मधुमेह से बचने के लिए पोषक आहार के साथ-साथ नियमित शारीरिक गतिविधियां यानी व्यायाम करना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि भोजन दवा है, अन्यथा दवा भोजन बन जाएगी।



रविवि में आयोजित व्याख्यान के दौरान शामिल छात्र और व्याख्यान देते मुख्य वक्ता डा. यूएस महादेव राय । ● विश्वविद्यालय



राइस ब्रान से बनाया एंजाइम

निशा गुप्ता ने बताया, एमाइलेज एंजाइम बनाने के लिए केमिकल का यूज किया जाता है। केमिकल महंगे होते हैं। उसे अगर नदी में छोड़ दिया जाए तो न सिर्फ मछलियां बल्कि वहां पानी पीने वाले जीव-जंतु भी मर सकते हैं। हमारा मकसद है सस्टेनेबिलिटी। कोई भी इंडस्ट्री उसी प्रोडक्ट को लेगी एंजाइम को सस्ते में प्रोड्यूस

करे। इसे लार्ज स्केल पर भी प्रोड्यूस किया जा सकता है। वेस्ट मटेरियल को हम जलाते हैं जो कि पर्यावरण और इंसान दोनों के लिए नुकसानदायक है। खतरनाक गैस भी निकलती है। इसलिए ठोस कचरे को बाँयो मटेरियल की तरह यूज कर रहे हैं।



ऊपर दिए क्यूआर कोड स्कैन कर सुनें निशा से बातचीत

क्या है एंजाइम?

एमिलेज एक एंजाइम है जो स्टार्च को ग्लूकोज और माल्टोज में तोड़ देता है। बायोलॉजिकल मॉलिक्यूल होता है जिसे आप प्रोटीन बोल सकते हैं। जैसे बाँडी की हार्टबीट बंद तो सब बंद। वैसे ही किसी भी इंडस्ट्री के लिए एंजाइम जरूरी है। बाँडी में भी बहुत से एंजाइम होते हैं एक तरह से एंजाइम बायोलॉजिकल मॉलिक्यूल है जिसका हर जगह यूज होता है।

रायपुर, रविवार, 09.01.2022

event इंटरनेशनल ई-कॉन्फेंस में एक्सपर्ट ने बताया

कैंसर को मात देगी स्टेम सेल टेक्नोलॉजी

पत्रिका plus रिपोर्टर

रायपुर. रविवार के जैवप्रौद्योगिकी अध्ययनशाला, एलुमनी एसोसिएशन ऑफ बायोटेक्नोलॉजी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल हेल्थ साइंसेज एंड आयुष विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ई कॉन्फेंस का समापन शनिवार को हुआ। रिसेंट एडवान्सेस इन बायोलॉजिकल साइंसेज एंड पोर्चुनिटीएस इन एंटरप्रेन्योरशिप पर आयोजित कॉन्फेंस में

सुदर्शन सिंह पोस्टडॉक्टरल रिसर्च फेलो थाईलैंड, जे. आर. कंवर प्रोफेसर एम्स भोपाल, स्मिता साहू प्रोफेसर एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा, ए. एम. देशमुख अध्यक्ष माइर बायोलॉजिस्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया एवं हर्ष बैस, प्रोफेसर डेलावेर बायोटेक अमेरिका के द्वारा विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यान दिया गया। इसमें कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों का स्टेम सेल तकनीक से उपचार,



सूक्ष्मजीवों द्वारा भारी तत्वों से होने वाले प्रदूषण का निदान और साथ ही रिसर्च से जुड़ी विभिन्न संभावनाओं, व्यवसायीकरण तथा अपने उत्पादों का

200 प्रतिभागियों ने पढ़ा अपना शोधपत्र

ई - कॉन्फेंस में कुल 500 प्रतिभागी पंजीकृत हुए जिसमें 200 ने शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। इस सत्र में चीन, इजराइल और अन्य देशों कई प्रतिभागी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के समन्वयक प्रोफेसर एस. के. जाधव, प्रोफेसर केशवकान्त साहू एवं पी. के. पात्रा तथा आयोजक सचिवों द्वारा 14 विभिन्न विषयों पर श्रेष्ठ शोध पत्र पढ़ने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

पेटेंट जैसे विषयों पर चर्चा की गई। प्रोफेसर एस. के. जाधव ने कार्यक्रम में भाग लिए प्रतिभागियों में से श्रेष्ठ शोधपत्र प्रस्तुतीकरण पाने वाले प्रतिभागियों के

इन्हें श्रेष्ठ शोधपत्र अवॉर्ड

पारामिता दास, कृपानिधि कॉलेज ऑफ फार्मेसी, बेंगलुरु को हर्बल टेक्नोलॉजी, अनुज रोहत्गी, बायोटेक्नोलॉजी नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रायपुर को फी सत्र में, मुमताज अहमद, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ को एग्रेटिक साइंस, वी. एस. जेधे साइंस एंड आर्ट्स कॉलेज, वर्धा को माइक्रोबियल टेक्नोलॉजी में श्रेष्ठ शोधपत्र अवॉर्ड से नामित किया गया।

नामों की घोषणा की। नागेन्द्र चंद्रवंशी, आयोजक सचिव ने ई- कॉन्फेंस के सारांश बताया।

हमले होंगे विफल

डीआरडीओ और रविशंकर विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने विकसित की सेल्फ इंडिकेटिंग बीट्स

जीवाणु बताएंगे लैंडमाइन का पता, नक्सली होंगे नाकाम



नईदुनिया
एक्सक्लूसिव

मनीष मिश्रा • रायपुर

भारतीय रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) शीघ्र ही ऐसे जीवाणुओं (बैक्टीरिया) से बने बीट्स को लाने जा रहा है जो लैंडमाइन का पता लगाकर नक्सली मंसूबों पर पानी फेरेगी।

डीआरडीओ के सहयोग से इन जीवाणुओं पर शोध रायपुर के पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के बायोटेक्नालाजी विभाग के अध्यक्ष डा. केशवकांत साहू ने किया है। डीआरडीओ के लाइफ साइंस रिसर्च बोर्ड ने इस शोध पर 33 लाख रुपये खर्च किए हैं। शोध पूरा कर डा.

मिट्टी में पांच जीवाणु लैंडमाइंस की उपस्थिति बताने में सक्षम

डा. साहू ने बताया कि डीआरडीओ ने तीन साल के लिए फंड दिया था। नेक्सल आपरेशन के तत्कालीन डीजी डीएम अवस्थी ने बस्तर में लैंडमाइन वाले स्थानों की मिट्टी उपलब्ध कराई थी। मिट्टी में 29 प्रकार के जीवाणु मिले। उनमें से पांच जीवाणु टीएनटी की उपस्थिति और अनुपस्थिति बताने में सक्षम मिले। टीएनटी विस्फोटक रसायन है। शोध में पीएचडी स्कालर डा. जिप्सी चंद्रा और डा. नेहा पांडेय ने सहायक की भूमिका निभाई है।

साहू ने डीआरडीओ को सौंप दिया है। डीआरडीओ इसका पेटेंट कराने की तैयारी में है। डा. साहू ने बताया कि मिट्टी में पांच जीवाणु ऐसे हैं जो

लैंडमाइन का पता लगाने में सक्षम हैं। इनसे सेल्फ इंडिकेटिंग बीट्स (छोटी-छोटी गोलियां) बनाई गई हैं। जहां लैंडमाइन होने का संदेह हो, वहां



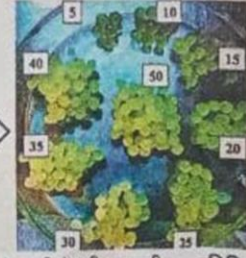
डा. केशवकांत साहू



डा. नेहा पांडे



डा. जिप्सी चंद्रा



लैंडमाइंस वाली जगह पर सफेद बीट्स हो जाती है हरी व काली। • रवि

भूमि की उर्वरा शक्ति बचाने में भी उपयोगी हैं ये जीवाणु

डा. केशवकांत साहू ने बताया कि विस्फोट वाली जगहों से मिले यही पांच जीवाणु टीएनटी से भूमि को होने वाले नुकसान को रोकने में भी सहायक हैं। विस्फोट के बाद टीएनटी से निकले जहरीले रसायन मिट्टी में मिल जाते हैं। इससे उस मिट्टी की उर्वरक क्षमता पर दुष्प्रभाव पड़ता है। यह जीवाणु टीएनटी के दुष्प्रभाव को दूर कर भूमि की उर्वरा शक्ति बनाए रखते हैं। ये पौधों की वृद्धि में भी सहायक होते हैं।

सफेद सेल्फ इंडिकेटिंग बीट्स डालने पर 30 से 35 मिनट में उनका रंग काला या हरा हो जाएगा। शोध में ऐसे क्षेत्रों की मिट्टी ली गई जहां

पहले विस्फोट हुआ था। इसमें ऐसे जीवाणु मिले जो ट्राइ नाइट्रो टालुइन या टीएनटी (विस्फोटक रसायन) के प्रति संवेदी हैं।



How a fungus grows inside a bug, goes on to kill and feed on it

Researchers have now found these fungi for the first time in central India

ASWATHI PACHA

When you are an *Ophiocordyceps* fungus, your life is straight out of a sci-fi movie: Infect a bug, eat from inside, kill it, sprout out and target the next bug. Researchers have now found this fungi (*Ophiocordyceps nutans*) for the first time in central India and show how it infects a stink bug. They also explore the potential of using these fungi as biopesticide and medicine.

It was early summer in 2018 when a team from Pandit Ravishankar Shukla University in Raipur set out on a plant survey at the pictures-

que Kanger Valley National Park in Chhattisgarh. "By chance we stumbled upon the fungus and dead bug and wanted to study it further. Morphological studies showed that it was *Ophiocordyceps nutans* which has been reported in India only from the Western Ghats," says Jai Shankar Paul, from the University's School of Studies in Bio-Technology, the first author of the paper published in the *Proceedings of the Zoological Society*.

The fungus was found on its specific host insect *Halyomorpha halys*. Also called the stink bug, this insect is a pest to forest trees and agricultu-



Walking dead: The fruiting body sprouts out from between the insect's thorax and head, and the fungus takes its nutrition.

ral crops. The simple but scary *modus operandi* of the fungi involves infecting the insect when alive, developing fungal mycelium inside its

thorax, and when it is time for the spores to come out, kill the bug.

The fruiting body sprouts out from between the insect's

thorax and head, and it continues to take nutrition from the dead body. The fungi are very host-specific, so the spores travel and infect many more stink bugs.

Dr. Paul adds that more studies are needed to understand in detail about the behaviour, mode of action, and exact interaction of the fungus with the insect.

Previous studies have shown that these fungi can be used as a biological pest control agent. The stink bug is known to damage the flower and fruits of soybean, green beans, apple, pear, and the team write that exploring these fungi as a pesticide will help reduce the harmful effect of chemicals in our fields.

"The more interesting and important point to note is

that several species of the *Ophiocordyceps* fungi have medicinal properties. Reports have shown that China has been traditionally using it. Also, in the Western Ghats, the local people use these fungi as an immune stimulator," adds corresponding author Professor S.K. Jadhav.

The authors say that studies from across the globe have noted that these fungi is rich in biologically active metabolites, vitamin C, phenolic compounds, and also has anti-inflammatory and antioxidant properties.

They also claim that it contains a component called 'cordycepin' which has anti-cancer properties. The fungi can be grown in lab settings and explored further, says the team.

Prof Sashidhara highlights developments of science and technology

■ **Staff Reporter**
RAIPUR, Feb 23

THE second day of science week festival 'Vigyan Sarvatra Pujyate: A Festival of SCoPE for All' at Pt Deendayal Upadhyay Auditorium here on Wednesday marked a lecture on 'Integration of Science and Technology for Sustainable Development' by Dr K K Ghosh, professor, School of Studies in Chemistry, Pt Ravishankar Shukla University (PRSU).

Meanwhile, Dr Ghosh detailed the discoveries of sci-

entists including Sir CV Raman, Sir J C Bose, Albert Einstein, Marie Curie, and others. He emphasised the importance of students sharing and interacting with their respective mentors' ideologies.

The professor also recommended the youth to focus on the resources they have with them and make the best of it.

Another lecture on the day was delivered by professor L S Sashidhara, professor and dean of Ashoka University in Sonipat on 'S&T since Independence: From Food

Security to Health Security; Time to Focus on Environmental Security'.

On the occasion, professor Sashidhara has highlighted various developments of science and technology from 1947 to 2022. He has detailed about various prestigious national institutes of India like IITs, IISc, IARI and their role in India's modern economy.

An elocution competition on the topic 'Role of Science for Socio-Economic Development in India' was also held today wherein each participant was

given three minutes to present the speech on the given topic.

The competition marked the participation of a total of 17 participants from various schools, colleges and institutes.

Similarly, an extempore competition was also organised today in which 20 participants presented their views on topics like advancement in transportation, role of science & technology in food processing, solar energy, ethanol for energy, cloud technology and others.

■ जैव विविधता दिवस टिशू कल्चर और प्लांटिंग के जरिए कंजर्वेशन रविवि की लैब में सांसें ले रहे दुर्लभ पौधे

रायपुर @पत्रिका. कई ऐसे पौधे हैं जिसका संरक्षण बहुत जरूरी है। जैव विविधता में इनका काफी महत्त्व है। इसे ध्यान में रखते हुए पं. रविशंकर शुक्ल विवि के बायोटेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट में एक्सपेरिमेंट किया जा रहा है। कैम्पस में दुर्लभ पौधों की प्लांटिंग की जा रही है वहीं लैब में टिशू कल्चर के जरिए उन्हें गो किया जा रहा है। इस विभाग के प्रो. एस.के. जाधव ने बताया, जो भी प्लांट हैं उस पर स्कॉलर्स ने रिसर्च भी किया है। उन्होंने पौधे और उनकी मान्यता से जुड़ी बातें भी साझा की। प्लांटिंग में काली हल्दी और सफेद मूसली भी शामिल हैं।



रविवि निजा बायोटेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट के लैब में कई ऐसे दुर्लभ पौधे हैं जिन्हें संरक्षित किया जा रहा है।

तेजबल

हिमालय के तराई में मिलने वाला पौधा तेजबल देश में सिर्फ छत्तीसगढ़ के अम्बिकपुर क्षेत्र में पाया जाता है। इसकी प्लांटिंग रविवि में की गई है। सरगुजा क्षेत्र टाइबलस एक गांव से दूसरे गांव जाते हैं तो इसकी टहनियों को जेब में रखकर चलते हैं। परियों को गुंठ में रखते हैं जिससे उन्हें ज्यादा प्यास नहीं लगती। इसकी लकड़ियों को घर में रखते हैं, उनका मानना है कि इससे निगेटिविटी नहीं आती।



वातनाशक: यह पौधा रायगढ़ इलाके में पाया जाता है। इसकी जड़ काट की परेशानी से निजात दिलाती है।



कलिहारी: इसे कलह को हराने वाला कहा जाता है। इसके फूल बहुत सुंदर होते हैं। इसके कंद औषधियुक्त होते हैं।

इसलिए मनाते हैं यह दिवस

पृथ्वी पर मौजूद जंतुओं और पौधों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए तथा जैव विविधता के मुद्दों के बारे में लोगों में जागरूकता और समझ बढ़ाने के लिए प्रत्येक 22 मई को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस मनाया जाता है। 20 दिसंबर 2000 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा प्रस्ताव पारित करके इसे मनाने की शुरुआत की गई थी। इस प्रस्ताव पर 193 देशों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे। दरअसल 22 मई 1992 को नैरोबी एक्ट में जैव विविधता पर अनिश्चितकाल के पाठ को रदक कर दिया गया था।

event दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ई-कॉन्फ्रेंस शुरू

देश-विदेश के विशेषज्ञों ने रखी बात, प्रतिभागियों ने प्रस्तुत किए शोध पत्र

पत्रिका plus रिपोर्टर

रायपुर. जैवप्राद्योगिकी अध्ययनशाला एवं एलुमनी एसोसिएशन ऑफ बायोटेक्नोलॉजी रविवि, पं. दीनदयाल उपाध्याय मेमोरियल एवं आयुष विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ई-कॉन्फ्रेंस की शुरुआत शुक्रवार को हुई।

कार्यक्रम में बतौर अतिथि रविवि के कुलपति के. एल. वर्मा और आयुष रविवि के कुलपति ए. के. चंद्राकर शामिल हुए। बाबू एल. टेकवानी प्रमुख वैज्ञानिक नेशनल सेंटर फॉर नेचुरल रिसर्च अमरीका



ने संक्रामक बीमारियों से संबंधित दवाइयों के खोज में आने वाली

बाधाएं एवं अवसर पर अपना व्याख्यान दिया।

दूसरे सत्र में वैज्ञानिक व पोफेसर मिर्जा हसनज्जमान, ढाका बांग्लादेश, खामस सूर्यति बिनतो मोहम्मद, मलशिया, आजाद इस्माइल कुवैत, अनीता यादव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और भूपेन्द्र कौशिक इंग्लैंड ने अपना व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर मिर्जा हसनज्जमान ने जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों में होने वाले प्रभाव एवं उनके निदान के बारे में बताया। इसके अलावा प्रभावी विषय कीस्पर तकनीक के बारे में बताया।

जिसमें बीमारियों के उपचार की अपार संभावनाएं जुड़ी हैं। पहले दिन विभिन्न देशों एवं 22 राज्यों से लगभग 450 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

जिसमें प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए। संचालन जैवप्राद्योगिकी अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर केशवकांत, प्रोफेसर एस. के. जाधव एवं प्रोफेसर पो. के. पात्रा डीन, चंदूलाल चंद्राकर मेमोरियल हॉस्पिटल भिलाई एवं एलुमिनी एसोसिएशन ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के अध्यक्ष, सचिव एवं सदस्यों ने किया।

विज्ञान आधारित पोस्टर प्रदर्शनी से विद्यार्थियों को मिलेगा प्रोत्साहन : राज्यपाल



रायपुर, 23 फरवरी (देशबन्धु)। राज्यपाल सुश्री अनुसुईया उइके आज आजादी के अमृत महोत्सव के तहत भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय तथा कार्यालय, प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार के तत्वावधान में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम 'विज्ञान सर्वत्र पूज्यते-सभी के लिए विज्ञान का उत्सव' में शामिल हुईं। उन्होंने विज्ञान एवं तकनीक आधारित पोस्टर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया।

राज्यपाल सुश्री उइके ने देश के 75 शहरों में हो रहे उक्त आयोजन में रायपुर शहर के चयनित होने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 22 से 28 फरवरी तक विज्ञान और तकनीक पर आधारित विभिन्न प्रतिस्पर्धी

प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ ही आम लोगों को बहुत महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेंगी। विज्ञान के क्षेत्र में भारत के वैभव और गौरवशाली इतिहास को जानने-समझने के लिए लगाई गई पोस्टर प्रदर्शनी से न केवल विद्यार्थी प्रोत्साहित होंगे बल्कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अपना योगदान भी देंगे। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के चुनौती भरे समय में लोगों को विज्ञान की उपयोगिता और इसका महत्व समझ में आया, जब देश के वैज्ञानिकों ने सस्ते दरों पर मेडिकल उपकरण तैयार किए। सीप्र अनुसंधान कर देश में ही कोविड का टीका तैयार कर लिया। भारतीय वैज्ञानिकों की यह सफलता सराहनीय और प्रेरणादायी है, जो विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में युवाओं को कार्य करने

के लिए आकर्षित करेगी। राज्यपाल सुश्री उइके ने कहा कि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ने पिछले कुछ वर्षों में ऐसा परिवेश निर्मित किया है जिससे विज्ञान के प्रति युवाओं में रुचि बढ़ी है और निरंतर शोध कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा अक्षय ऊर्जा तथा कचरा प्रबंधन के लिए किए गए कार्यों की सराहना की तथा विश्वास जताया कि आगे भी विद्यार्थी विज्ञान के क्षेत्र निरंतर शोध करेंगे और देश एवं प्रदेश का नाम रोशन करेंगे। सीएसआईआर-एचआरडीसी के निदेशक श्री राजेन्द्र सिंह सांगवान ने मानव उद्भव से लेकर विज्ञान के बढ़ते दायरे और प्रगति का क्रमिक उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि मानव जिज्ञासा ने विज्ञान के क्षेत्र में नये शोध कार्य

को बढ़ावा दिया है, जो सतत रूप से जारी है। हमारी युवा पीढ़ी की विज्ञान के प्रति बढ़ती रुचि से हमें आशान्वित होना चाहिए कि भविष्य के भारत में अनेकों ऐसे खोज और शोध होंगे, जिससे पूरा विश्व लाभान्वित व गौरवान्वित होगा।

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. के.एल. वर्मा ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। राज्यपाल सुश्री उइके ने विश्वविद्यालय के कुलपति व प्रध्यापकों के साथ विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रबंधन द्वारा राज्यपाल सुश्री उइके को शाल-श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्राध्यापकाणा तथा विद्यार्थीगण उपस्थित थे।



#YoungScientist एनसीएससी के चेयरमैन ने विज्ञापन की टैगलाइन से समझाया सक्सेस मंत्र- डिफरेंट सोचो, कोई भी आइडिये पर काम करो और जागते रहो

राजपुर, छत्तीसगढ़ काउंसिल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और रविवि की ओर से 18वां युवा वैज्ञानिक सम्मेलन का समापन समारोह डीडीयू ऑडिटोरियम में रखा गया। चीफ गेस्ट नेशनल चिल्ड्रस साइंस कांग्रेस के चेयरमैन ललित शर्मा रहे। समारोह में 19 टॉपिक के 20 युवा वैज्ञानिकों को यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड-2023 से नवाजा गया। खास बात ये रही कि रिसर्च में गल्स का दबदबा रहा। एग्रीकल्चर साइंस स्ट्रीम से दो युवाओं का चयन किया गया। इन्हें संयुक्त तौर पर गोल्ड मिला, लेकिन प्रोत्साहन राशि पूरी दी गई।

चीफ गेस्ट ने छात्रों को विज्ञापन की पंचलाइन के जरिए सक्सेस मंत्र दिया। उन्होंने विज्ञापन की पंचलाइन सुनाकर प्रोडक्ट का नाम पूछा। तीनों विज्ञापनों की टैगलाइन को जोड़ते हुए कहा कि आपको सफल होना है तो इसे गांठ बांध लो। थिक हटके यानी आपको कुछ अलग ही सोचना है। और क्या सोचना है- एक आइडिया जो बदल दे आपकी दुनिया। और इसके लिए जरूरी है जागना, क्योंकि आप सब सोएंगे तो देश कैसे जागेगा।

अलसी से ओमेगा थ्री और फाइबर

सोनल उपाध्याय ने अलसी की ऐसी किस्म विकसित की है जिसमें ओमेगा थ्री के साथ-साथ फाइबर भी मिलेगा। यानी एक ही फसल से दो फायदे हो सकेंगे। जो लोग मछली नहीं खाते उन्हें अलसी से ओमेगा थ्री मिल सकता है। अलसी में 50 से 55 प्रतिशत तक ओमेगा थ्री रहता है। साथ ही फाइबर भी मिलता है। ओमेगा हाई डिजीज के लिए फायदेमंद है। कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। मैंने आइजीकेवी में उपलब्ध हजारों लाइसेंस में से कुछ को सलेक्ट किया और आपस में प्रोसेस कराया। इस रोध में मुझे ढाई से तीन साल लगे।



अतिथियों से अवॉर्ड लेती एनआईटी की आयुषी शर्मा। आयुषी ने इलेक्ट्रिक व्हीकल में उपयोग आने वाली लिथियम आयन बैटरी पर रिसर्च किया है।

गल्स का रहा दबदबा

नाम	स्ट्रीम	इंस्टीट्यूट/ विवि
रीचा साव	एग्रीकल्चर साइंस	आईजीकेवी
सोनल उपाध्याय	एग्रीकल्चर साइंस	आईजीकेवी
रसलीन कौर	बायोलॉजी	रविवि
अनिता भोई	बायोटेक्नालॉजी	रविवि
लवकेश सिंह तंवर	कैमिकल साइंसेस	रविवि
तनवीर हैदर	अर्थ साइंसेस	एनआईटी
अनुश्री साहा	कैमिकल इंजीनियरिंग	रविवि
मयंक लोवांशी	सीएस/आईटी	आईआईआईटी
श्यामंतिका सरकार	सिविल एवं आर्किटेक्चर	एनआईटी
आयुषी शर्मा	ईईई	एनआईटी
राजीव नयन	मेकैनिकल मेकट्रॉनिक्स	रविवि
एश्वर्याश्री ताम्रकार	इनवॉयथरमेंटल साइंसेस	रविवि
भानुप्रताप नायक	होम साइंसेस	डिग्री गल्स कॉलेज
निशा गुप्ता	लाइफ साइंसेस	रविवि
शिखा तिवारी	मैथ्स	रविवि
शारदा गुप्ता	फार्मास्यूटिकल साइंसेस	एनआईटी
कंचन तिवारी	फिजिक्स	साइंस कॉलेज
अकिता ठाकरे	वेटिनरी साइंस	वेटिनरी कॉलेज अंजोरा
सोनाली स्वागतिका	माइनिंग मेटलर्जी	सीआईएमएफआर बिलासपुर
छाया भट्ट	इंजीनियरिंग	रविवि

मुनगे की पत्ती से छूमंतर होगा घुटने का दर्द



रविवि की अनिता भोई ने मुनगे की पत्ती पर रिसर्च किया है। यह घुटने के दर्द के लिए रामबाण है। अनिता ने बताया, आर्थो की समस्या बढ़ती जा रही है। मेडिसिन से दर्द तो कम होता है लेकिन उसके साइड इफेक्ट रहते हैं। मैंने नैनो पार्टिकल का यूज कर मुनगे की पत्ती से दवा बनाई है। काली मिर्च का जेल बनाकर उसे घुटने में लगाया जाता है। काली मिर्च में खासियत होती है कि वह स्कीन के भीतर दवा का असर पहुंचाए।

ऊपर दिए क्यूआर कोड स्कैन कर सभी अर्चीवर्स को तस्वीरें देखें सम्मान लेंगे हुए। साथ ही चुनिंदा रिसर्चर की बातचीत का वीडियो भी



रायपुर 16-02-2022

रविवि के विज्ञान उत्सव में स्पेस-मिसाइल की जानकारी

रायपुर | स्पेस टेक्नोलॉजी में देश अभी कहां है? कैसे शुरुआत हुई। कौन-कौन प्रमुख वैज्ञानिक हैं? मिसाइल टेक्नोलॉजी में हमें क्या कामयाबी मिली? जैसे, विज्ञान से संबंधित कई रोचक जानकारियां एक मंच के नीचे मिलेगी। पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में 22 फरवरी से सभी के लिए विज्ञान का उत्सव नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसमें वैज्ञानिकों के व्याख्यान होंगे। पोस्टरों का प्रदर्शन होगा। पुस्तक मेला, यंत्र प्रदर्शनी, प्रतियोगिता समेत अन्य आयोजन होंगे। पं.दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम रायपुर में 22 से 28 तक यह कार्यक्रम चलेगा। मंगलवार को रविवि के कुलपति डॉ.केएल.वर्मा ने इस संबंध में पत्रकारों के जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आजादी के अमृत महोत्सव के तहत भारत सरकार से सभी के लिए विज्ञान का उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। देश के 75 स्थानों में एक साथ यह कार्यक्रम होंगे। इसके लिए रविवि का चयन भी हुआ है। 22 फरवरी को दिल्ली में उद्घाटन होगा।

Science based poster exhibition will encourage students: Uikey

■ Governor launches 'Vigyan Sarvatra Pujyate' program

Raipur, Feb 23:

Governor Ms. Anusuiya Uikey participated in the program "Vigyan Sarvatra Pujyate: Celebration of Science for All" organised in the auditorium of Pandit Ravi Shankar Shukla University under the aegis of Chief Scientific Adviser, Ministry of Culture and Office, Government of India under the Amrit Festival of Independence. She inaugurated the science and technology based poster exhibition. Governor Ms. Uikey congratulated Raipurians for being selected in the above event being organised in 75 cities of the country and while addressing the program said that from February 22 to 28, students through various activities and competitions based on science and technology. Along with this, common people will get very important information. The poster exhibition organised to know



and understand the glory and glorious history of India in the field of science will not only encourage the students but will also contribute in the field of science and technology. She said that in the challenging times of Covid-19, people understood the usefulness and importance of science, when the scientists of the country prepared medical equipment at cheap rates. After doing quick research, the vaccine of Covid was prepared in the country itself. This success of Indian scientists is commendable and inspira-

tional, which will attract youth to work in the field of science and technology. Governor Ms. Uikey said that Pandit Ravi Shankar Shukla University has created such an environment in the last few years, due to which the interest of youth towards science has increased and research work is being done continuously.

She appreciated the work done by the students of the university for renewable energy and waste management and expressed confidence that in future also the students would do continuous re-

search in the field of science and would bring laurels to the country and the state. Rajendra Singh Sangwan, Director, CSIR-HRDC made a gradual mention of the growing scope and progress of science since human origin. He said that human curiosity has encouraged new research work in the field of science, which is continuing continuously. With the increasing interest in science of our young generation, we should be hopeful that in the future India will have many such discoveries and researches, which will benefit and make the whole world proud.

The Vice Chancellor of Pandit Ravi Shankar Shukla University, Dr. K.L. Verma also addressed the program. Governor Ms. Uikey visited the science exhibition along with the Vice Chancellor and Professors of the University. On this occasion, Governor Ms. Uikey was honoured by the university management with a shawl-shripal and a memento. University professors and students were present in the program.

विज्ञान सर्वत्र पूज्यते कार्यक्रम की हुई शुरुआत

इंडस वैली के समय का साइंस अब हो गया है एडवांस, हो सकारात्मक कार्य



प्रो. राजेन्द्र सिंह सांगवान

पत्रिका plus रिपोर्टर

रायपुर. इस देश में ज्ञान की पूजा होती है और विज्ञान ज्ञान का ही एक हिस्सा है। इस ज्ञान का विकास केवल विज्ञान में नहीं हुआ, बल्कि सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक और संस्कारों में हुआ। साइंटिफिक एंड इन्वेंटिव रिसर्च अकेडमी (एसीएसआईआर) के डायरेक्टर और वाइस चांसलर प्रोफेसर राजेंद्र सिंह सांगवान मंगलवार को पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आजादी के अमृत महोत्सव के जश्न कार्यक्रम में बोल रहे थे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय सभागार में आयोजित कार्यक्रम का शीर्षक विज्ञान सर्वत्र पूज्यते था। मुख्य अतिथि राज्यपाल अनुसुइया उइके थी और विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेंद्र सिंह सांगवान थे। राज्यपाल ने रविवि में चल रहे शोधों और विकास



की सराहना की। कुलपति केशरीलाल वर्मा ने भी विश्वविद्यालय के शैक्षणिक प्रगति की जानकारी दी।

विज्ञान के क्षेत्र में कितनी दूरी तय की

प्रो. सांगवान ने कहा कि जब हम इस कार्यर म की बात करते हैं कि विज्ञान सर्वत्र पूज्यते, तो हमें यह जानना जरूरी है कि, विज्ञान के क्षेत्र में हमने कितनी दूरी तय की और हमें इसे किस तरह विकसित करना है। आगे ऐसा क्या करना चाहिए, जिससे

हम देश को विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ा सके। उन्होंने कहा कि सूर्य की उर्जा तो पृथ्वी पर जीवन का आधार है वो 4 बिलियन साल और चलेगा इसका मतलब यह नहीं की उसके बाद जीवन नहीं चलेगा। मानव की उत्पत्ति मात्र जीव के रूप में नहीं है बल्कि एक मस्तिष्क के रूप में है। सकारात्मक खोज, विकास और सोच मानव जाति को अनंत काल तक जीवित रखेगी। भारत की सभ्यता दुनिया में सबसे पुरानी है। सिंधु घाटी सभ्यता की पंजाब और हरियाण में साइट है वो तत्कालीन समय के अनुसार की खोज थी और

आज मानव जीवन में जो भी सुधार हो रहे है उसका आधार वहीं पुरानी सभ्यता है।

आजादी के 75 वें साल के अमृत महोत्सव में हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि आने वाले समय में जो गति हमारी विज्ञान के क्षेत्र में है उसे बढ़ाए। युवा वर्ग यदि विज्ञान की शिक्षा को महत्व देगा तो ग्रामीण इलाकों के बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। एक सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यर म में मेगा बुक फेस्टिवल और साइंस फेस्टिवल का आयोजन किया जाना है।

‘रंग रसायन’ में प्रयोगों ने चौंकाया

विज्ञान उत्सव

- विज्ञान सर्वत्र पूज्यते का पांचवां दिन
- रासायनिक प्रयोगों का लाइव प्रदर्शन

■ नवभारत ब्यूरो | रायपुर.

www.navabharat.news

राजधानी के पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में विज्ञान सर्वत्र पूज्यते के पांचवें दिन रंग रसायन में रसायन विज्ञान की जादुई प्रतिक्रियाओं का प्रदर्शन किया गया. रंगीन स्याही को पारदर्शी दिखाना, पानी को विभिन्न रंगों में बदलना, मंच पर लावा प्रयोग यहां पहुंचे विद्यार्थियों को चौंकाने वाले थे. खासकर स्कूली बच्चों को.

देशभर के 75 स्थानों पर विज्ञान के प्रसार का उत्सव मनाया जा रहा है. रायपुर में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को इस आयोजन की जिम्मेदारी मिली है. इसके तहत पांचवें दिन की शुरुआत ओडिशा राज्य उच्च शिक्षा परिषद के कार्यकारी सदस्य डॉ. एके पति के नृत्य के समय पर व्याख्यान से हुई. डॉ. पति सांप जैसे सरीसृपों की सर्केडियन लय के पीछे की आणविक तंत्र पर प्रकाश डाला. उन्होंने एक दिन में अलग-अलग



अभाज्य संख्याओं की रोचक जानकारी

केरल स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स कोझिकोड के निदेशक प्रो. के. चक्रवर्ती ने नंबरर्स एंड बियॉन्ड विषय पर व्याख्यान दिया. उन्होंने युवाओं के साथ अभाज्य संख्याओं के बारे में रोचक तथ्य, उनके प्रकार और

दैनिक जीवन में उनका चित्रण भी साझा किया. प्रो. चक्रवर्ती ने बर्टेंड के प्रमेय, सोफी जर्मेन प्राइम, मेर्सन प्राइमर्स, गोल्डबैक अनुमान, टैरेंटम के आर्किटास जैसे विभिन्न तथ्यों पर चर्चा की.

समय के दौरान मानव में हार्मोन, ऑक्सीटोसिन, सेरोटोनिन, ग्लूकोर्टिकाइड्स आदि विभिन्न हार्मोन के वृद्धि स्तर में अंतर पर प्रकाश डाला. दिन के व्याख्यान के बाद रसायन के प्रयोगों का प्रदर्शन

हुआ. रविवि के रसायन विज्ञान अध्ययनशाला के सहायक प्राध्यापक डॉ. मनमोहन लाल सतनामी और उनके मार्गदर्शन में रंग रसायन दिखाने के लिए रासायनिक प्रयोगों का लाइव प्रदर्शन किया गया.

हमारे 75 रत्न... अमृत महोत्सव के तहत रविशंकर यूनिवर्सिटी ने रखा विज्ञान उत्सव परमाणु कार्यक्रम के जनक राजा रमन्ना जैसे 75 महान वैज्ञानिकों की कहानी पोस्टर में

सिटी रिपोर्टर, रायपुर

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय की ओर से पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में विज्ञान उत्सव- विज्ञान सर्वत्र पूज्यते का आयोजन किया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत रायपुर सहित देशभर के 75 शहरों में एक साथ ये कार्यक्रम रखा गया है। विज्ञान पर चर्चा के साथ ही यहां प्रदर्शनी भी लगाई गई है। प्रदर्शनी में 150 पोस्टर हैं, जिसमें से 75 पोस्टर में देश के 75 महान वैज्ञानिकों की जर्नी उनकी ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर के साथ पेश की गई है। पढ़िए तौन वैज्ञानिकों की कहानी।

लालजी सिंह: डीएनए टेस्ट के जनक, मर्डर केस भी सुलझाए

लालजी सिंह ने भारत में डीएनए फिंगर प्रिंट तकनीक की खोज की है। इससे 1988 में देश में ब्राइम इन्वेस्टिगेशन को नई दिशा मिली। 1971 में 62 पेज की उनकी पीएचडी की थीसिस जर्मनी के रिसर्च जनरल में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने देश के सबसे चर्चित राजीव गांधी मर्डर केस, नैना साहनी मर्डर, स्वामी श्रद्धानंद, सीएम बेअंत सिंह की जांच डीएनए फिंगर प्रिंट तकनीक से सुलझाई। फयूरी सम्मान मिला।



रमन्ना: सद्दाम हुसैन ने दिया था परमाणु बम बनाने का ऑफर

राजा रमन्ना ने भारत के परमाणु कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे 1964 में परमाणु कार्यक्रम में शामिल हुए। शुरुआत में प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक डॉ. होमी जहांगीर भाभा की लीडरशिप में उन्होंने काम किया। उनके निधन के बाद 1967 में इस कार्यक्रम के निदेशक बन गए। वे 1974 में भारत के पहले परमाणु परीक्षण (स्माइलिंग बुद्ध) करने वाले वैज्ञानिक दल के मुखिया थे। 1978 में इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने इराक के लिए परमाणु बम बनाने का प्रस्ताव रखा देशभक्त रमन्ना ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया। पद्म विभूषण से सम्मानित हुए।



डॉ. शंभुनाथ डे: हैजा के जीवाणु की पहचान की

वैज्ञानिक डॉ. शंभुनाथ डे ने हैजा के जीवाणु पर विशेष शोध किया और पता लगाया कि यह जीवाणु शरीर में जहर पैदा करता है, जिससे शरीर में पानी की कमी हो जाती है और मरीज की मृत्यु हो जाती है। उनकी ये रिसर्च हैजा को हराने में महत्वपूर्ण साबित हुई। शंभुनाथ डे ने अपने काम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। उन्हें 'नोबेल पुरस्कार' के लिए नामांकित भी किया गया। उनका नामांकन वैज्ञानिक जोशुआ लोडरबर्ग ने किया था।



रविवि परिसर में लगे 70 प्रकार के 350 पेड़-पौधों की टैगिंग हुई शुरू

100-100 साल पुराने पौधों के क्यूआर कोड से गुण व प्रजाति की मिलेगी जानकारी

रायपुर | **DBStar** पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर में पेड़-पौधों की टैगिंग की जा रही है। चरणबद्ध तरीके से पूरे परिसर में लगे पेड़-पौधों की टैगिंग की जाएगी। पहले चरण की टैगिंग की प्रक्रिया शुरू हो गई है। पहले चरण में 70 वैरायटी के कुल 350 पौधों की टैगिंग की जा रही है। विश्वविद्यालय परिसर के अंदर स्थित सभी पौधों की टैगिंग आने वाले समय में की जाएगी। बायोटेक्नोलॉजी डिपार्टमेंट के प्रोफेसर एस के जाधव ने बताया कि अभी पहले चरण में 350 पौधों की टैगिंग की जा रही है। आने वाले समय में पूरे यूनिवर्सिटी कैंपस में मौजूद सभी पौधों की टैगिंग की जाएगी। 100-100 साल पुराने पौधे रविशंकर विश्वविद्यालय परिसर में मौजूद है। कैंपस में कौन-कौन से पौधे लगे यह सिर्फ कुछ लोग ही जानते थे, लेकिन अब टैगिंग के माध्यम से बॉटनिकल नाम और लोकल नाम लिखा जा रहा है। साथ ही क्यूआर कोड भी लगाया जा रहा है जिसे स्कैन करने पर पौधे से संबंधित सभी जानकारियां मिल जाएगी।

टैगिंग के फायदे

1. पौधों की टैगिंग के दौरान उनका बॉटनिकल और लोकल नाम लिखा जा रहा है। इससे बॉटनिकल नाम की जानकारी भी अब मिल जाएगी।
2. क्यूआर कोड स्कैन करते ही पेड़-पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी मिल जाएगी। साथ ही पौधों के उपयोग के बारे में भी जानकारी मिलेगी।



रविवि परिसर में चरणबद्ध तरीके से पेड़-पौधों की टैगिंग की जा रही है। पहले चरण में 350 पौधों की टैगिंग की जा रही है। 5 दिनों के भीतर पहले चरण की प्रक्रिया खत्म हो जाएगी। इसके बाद फिर दूसरे चरण की प्रक्रिया शुरू होगी। एसके जाधव, प्रोफेसर, बायोटेक्नोलॉजी

पर्यावरण दिवस: कोशिकाओं को बढ़ने नहीं देता कलिहारी का कांदा

कैंसर कंट्रोल करने वाले पौधे को संरक्षित कर रहे रविवि के प्रोफेसर

पत्रिका plus रिपोर्टर

रायपुर. पर्यावरण का संरक्षण सिर्फ पेड़ लगाना या काटने से बचाना ही नहीं बल्कि ऐसे प्लांट्स का कंजर्वेशन भी है जो कैंसर जैसी बीमारी को नियंत्रित कर सकते हैं। ऐसी ही एक पहल की है रविवि के प्रोफेसर नागेंद्र कुमार चंद्रवंशी ने। उन्होंने बताया कि ग्लोरियोसा सुपरबा (कलिहारी) नामक एक पौधा है। जिसका कांदा और बीज औषधि के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। खासतौर पर ट्राइबल इलाकों में दवा बनाने में इसे यूज करते हैं। चंद्रवंशी कहते हैं कलिहारी के बीज और कांदों में ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो बाँडी की गैरजरूरी



मांसपेशियों को बढ़ने नहीं देते। कैंसर तब होता है, जब शरीर में कोशिकाएं असामान्य रूप से बढ़ने और विभाजित होने लगती हैं। कोशिकाओं की उम्र जैसे-जैसे बढ़ती या क्षतिग्रस्त होती है, ये कोशिकाएं मर भी जाती हैं। इनकी जगह नई कोशिकाओं का निर्माण होता है। जब किसी को कैंसर होता है, तो कोशिकाएं इस तरह से अपना काम

करना बंद कर देती हैं। पुरानी और क्षतिग्रस्त कोशिकाएं मरने की बजाय जीवित रह जाती हैं और जरूरत नहीं होने के बावजूद भी नई कोशिकाओं का निर्माण होने लगता है।

पांच साल का रिसर्च

चंद्रवंशी ने बताया, राज्य औषधीय बोर्ड से हमें पता चला कि कौन-कौन से पौधे विलुप्ति की कगार पर हैं। उसमें से एक कलिहारी भी था। मैंने 5 साल इस पर रिसर्च किया। मैंने पाया कि यह पौधा शायद ही कभी एक बीज से पौधे में पूरी तरह से अंकुरित हो पाता है। इतने कम अंकुरण दर के साथ, यह कीटों और घूम रहे मवेशियों के हमलों की चपेट में आकर विलुप्त की कगार पर पहुंच गया है। फिर क्या

दीपेंद्र लगा रहे पौधे

दीपेंद्रधर दीवान पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। वे बताते हैं, मैं साल 2005 से इस मिशन में जुटा हूँ। इस साल 155 पीपल के पौधे लगाने का लक्ष्य है। पिछले साल 1800 से अधिक पौधे लगाए थे। इसमें से 1200 से अधिक ग्राहक चुके हैं। बाढ़ के चलते 600 पौधे नष्ट हो गए। दीपेंद्र कहते हैं, महज पौधे लगा देने से आपका दायित्व पूरा नहीं हो जाता वरन, उसकी सही देखरेख जरूरी है।

था मैंने फौरन लैब में इसकी अंकुरण की प्रक्रिया शुरू की। वे कहते हैं जल्द ही आपको इसके पौधे विवि परिसर में लहलहाते नजर आएंगे।

उत्सव

28 तक देश के 75 स्थानों में एक साथ चलेगा कार्यक्रम, पं. दीनदयाल उपाध्याय आडिटोरियम में होगा आयोजन

रविवि में 22 से शुरू होगा विज्ञान सर्वत्र पूज्यते उत्सव

रायपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत प्रदेश के सबसे बड़े पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय में 22 से 28 फरवरी तक विज्ञान सर्वत्र पूज्यते: सभी के लिए विज्ञान का उत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। वह आयोजन एक साथ देश के 75 जगहों में आयोजित किया जा रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार संस्कृति मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग जीव प्रौद्योगिकी विभाग वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, सूचना विज्ञान मंत्रालय, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, परमाणु ऊर्जा विभाग, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद और ईरिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय,



पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डा. केशरीलाल वर्मा ने सी एनएनएन वार्ता । ● नईदुनिया

नई दिल्ली के समर्थन से विज्ञान प्रसार विंग यह कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। कार्यक्रम पं. दीनदयाल उपाध्याय आडिटोरियम, विज्ञान महाविद्यालय परिसर, रायपुर में होगा।

सुनने को मिलेंगे वैज्ञानिकों के व्याख्यान : रविवि के कुलपति डा. केशरीलाल वर्मा और कुलसचिव डा. गिरीशकांत पांडेय ने पत्रकार वार्ता में

बताया कि भारत सरकार के विज्ञान प्रसार विंग ने छत्तीसगढ़ राज्य से पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर को इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए अधिकृत किया गया है। इस उत्सव के आयोजन के दौरान अंतरराष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों के लोकप्रिय व्याख्यान, एम्सओ में विज्ञान प्रसार द्वारा तैयार पोस्टरों का प्रदर्शन, पुस्तक मेला,

यंग प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, विज्ञान मॉडल बनाने की प्रतियोगिता, वैज्ञानिक परिचर्चा, नारा लेखन प्रतियोगिता, वैज्ञानिक नाटक, आदि 75 प्रदर्शनी के अंतर्गत 75 एक्सपो, 75 व्याख्यान, 75 फिल्म, 75 रेडियोकार्ड, 75 विज्ञान जागरूकता गतिविधि, 75 पुस्तकें, 75 पोस्टर, 75 अवाइर्स का आयोजन किया जाएगा।

ऐसे चलेगा कार्यक्रम

23 फरवरी, 2022 को पूर्वाह्न में विज्ञान के इतिहास पर आधारित व्याख्यान होगा। अपराह्न में इसी विषय को लेकर विविध आयोजन किए जाएंगे। 24 फरवरी, 2022 को पूर्वाह्न में आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक आधारित व्याख्यान होगा और अपराह्न में वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं क्वीज प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। 25 फरवरी, 2022 के पूर्वाह्न में स्वदेशी ज्ञान- विज्ञान एवं नवाचार पर आधारित व्याख्यान होगा एवं अपराह्न में पोस्टर बनाने एवं विज्ञान पर आधारित पेंटिंग

प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। 26 फरवरी, 2022 को विज्ञान के साहित्य पर आधारित व्याख्यान होगा और में स्लोगन लेखने की प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। 27 फरवरी, 2022 को पूर्वाह्न में व्याख्यान होगा, जो अगले 25 वर्षों में विज्ञान के क्षेत्र में भारत की स्थिति पर आधारित होगी। अपरा- में विज्ञान पर आधारित नाटिका, गीत, आदि आयोजित किए जाएंगे। 28 फरवरी, 2022 को इस आयोजन का बृहद् समापन समारोह नई दिल्ली में आयोजित होगा।

प्रदर्शनी भी लगेगी

कुलपति डा. वर्मा ने बताया कि इस पूरे कार्यक्रम के अंतर्गत 22 फरवरी, 2022 को नई दिल्ली में बृहत् शुभारंभ होगा, जिसका प्रसारण 75 स्थानों पर होगा। साथ ही यहां पर हम अपने कार्यक्रम का भी विधिवत शुभारंभ करेंगे। इसी दिन हमारे पोस्टर प्रदर्शनी और दूसरे तरह की प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया जाएगा।

रोज बुलाएंगे 50-50 विद्यार्थी

जिला रायपुर से प्रतिदिन सुबह 11.00 बजे से शाम 4.30 बजे तक दो स्कूलों से 50-50 छात्र अर्थात् प्रतिदिन दो स्कूलों से कुल 100 छात्र इसी तरह दो महाविद्यालयों से प्रतिदिन 50-50 विद्यार्थी और विश्वविद्यालय अध्ययनशालाओं के विद्यार्थियों की उपस्थिति रहेगी।

टेलीस्कोप, गगनयान, इसरो के लांच वीकल्स का आकर्षण

विज्ञान सर्वत्र पूज्यते

- पूरे देश के साथ रायपुर के पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में शुभारंभ
- रायपुर में राज्यपाल की उपस्थिति में शुरू हुआ विज्ञान के प्रसार का उत्सव

नवभारत ब्यूरो | रायपुर

www.navabharat.news

देशभर के 75 स्थानों के साथ ही राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज परिसर स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में विज्ञान सर्वत्र पूज्यते: विज्ञान के प्रसार का उत्सव आरंभ हुआ. रायपुर में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किए जा रहे समारोह का शुभारंभ राज्यपाल सुश्री अनुसुइया उइके के आतिथ्य में हुआ. यहां साइंस एक्सपो सभी के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. इसरो का लांच व्हीकल, मिशन गगनयान, तरह-तरह के टेलीस्कोप, मेजर



वैभव जान विद्यार्थी होंगे प्रोत्साहित : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा कि विज्ञान के क्षेत्र में भारत के वैभव और गौरवशाली इतिहास को जानने-समझने के लिए लगाई गई पोस्टर प्रदर्शनी से न केवल विद्यार्थी प्रोत्साहित होंगे बल्कि विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में

डिस्कवरी से जुड़ी प्रदर्शनी ने बच्चों से लेकर बड़ों तक को प्रभावित किया.

एक सप्ताह तक चलने वाले इस कार्यक्रम का आयोजन देशभर में 75 स्थानों पर किया जा रहा है. छत्तीसगढ़ में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को आयोजन की जिम्मेदारी दी गई है जिसके

अपना योगदान भी देंगे. उन्होंने कहा कि कोविड-19 के चुनौती भरे समय में लोगों को विज्ञान की उपयोगिता और इसका महत्व समझ में आया, जब देश के वैज्ञानिकों ने सस्ते दरों पर मेडिकल उपकरण तैयार किए.

द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है. राज्यपाल सुश्री उइके ने देश के 75 शहरों में हो रहे उक्त आयोजन में रायपुर शहर के चयनित होने पर बधाई एवं शुभकामनाएं दी और कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि 22 से 28 फरवरी तक विज्ञान और तकनीक पर

आधारित विभिन्न गतिविधियों व प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ ही आम लोगों को बहुत महत्वपूर्ण जानकारियां मिलेगी.

जिज्ञासा ने नए शोध को बढ़ावा दिया : सांगवान

वैज्ञानिक और नवीकृत अनुसंधान अकादमी के निदेशक डॉ. राजेंद्र सिंह सांगवान ने मानव उद्भव से लेकर विज्ञान के बढ़ते दायरे और प्रगति का क्रमिक उल्लेख किया. उन्होंने कहा कि मानव जिज्ञासा ने विज्ञान के क्षेत्र में नये शोध कार्यों को बढ़ावा दिया है, जो सतत रूप से जारी है. हमारी युवा पीढ़ी की विज्ञान के प्रति बढ़ती रूचि से हमें आशान्वित होना चाहिए कि भविष्य के भारत में अनेकों ऐसे खोज और शोध होंगे, जिससे पूरा विश्व लाभान्वित व गौरवान्वित होगा. राज्यपाल सुश्री उइके ने कहा कि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय ने पिछले कुछ वर्षों में ऐसा परिवेश निर्मित किया है जिससे विज्ञान के प्रति युवाओं में रूचि बढ़ी है.

Governor inaugurates 'Vigyan Sarvatra Pujyate' fest

■ Staff Reporter

RAIPUR, Feb 22

PT RAVISHANKAR Shukla University (PRSU) organised a 'Vigyan Sarvatra Pujyate: Festival of SCoPE for All' event at Pt Deendayal Upadhyay Auditorium, Raipur from February 22 at 28. The event started with the Live streaming from New Delhi celebrating the 75th Anniversary of Indian Independence 'Azadi ka Amrit Mahotsav'.

This one-week event started at 75 locations across the country with the theme 'Integrated Approach for Sustainable Development'. Union Minister of State for Science and Technology Dr Jitendra Singh was the Chief guest. Union Minister for Culture G Kishan Reddy also addressed the event. Scientific Secretary for Principal Scientific Advisor Dr Parvinder Maini shared her views on the occasion.



Governor Anusuiya Uikey inaugurating the 'Vigyan Sarvatra Pujyate: Festival of SCoPE for All' event at Pt Deendayal Upadhyay Auditorium, Raipur on Tuesday.

MegaBook festival and Science festival is scheduled to be organised during the one-week programme. The first day's celebration began with the arrival of Chief Guest Governor of Chhattisgarh Anusuiya Uikey, and other dignitaries. The guests had an outlook on Science Expo while walking towards the premises of the auditorium. The programme began with National Anthem and Kulgeet followed by lamp lighting and felicitation of the guests. Later addressing the

event, Professor School of Studies in Chemistry M K Deb spoke about the achievements of Pt Ravishankar Shukla University, Raipur. He shed lights on the glimpses on memorable dates of foundation day, opening of the teaching departments and also mentioned about Pt Sundarlal Sharma Library, as being one among the 16 Workstations in the country in having Workstation Census of India. He also focused on the best practices, experts contribution con-

ducted in the PRSU.

Head of the Department, School of Studies in Biotechnology and Programme Coordinator Professor Keshav Kant Sahu gave a brief description about the events to be held in this weeklong festival. Vice-Chancellor of PRSU Professor Keshari Lal Verma presided over the function, which was then addressed by the Guest of Honor Dr Rajendra Singh Sangwan, Director Academy of Scientific and Innovative Research, CSIR-HRDC, Ghaziabad. He has highlighted about the previous scientific contributions by Dr C V Raman, Sir G Mendel, Sir Darwin and others.

In her address Governor Anusuiya Uikey appreciated the organising committee and ongoing researches and development of the PRSU and congratulated for this mega event. The programme ended with Registrar of PRSU Prof Girish Kant Pandey proposing a vote of thanks.

देश के साथ रायपुर में विज्ञान का उत्सव 22 से

आजादी का अमृत महोत्सव

- छत्तीसगढ़ में आयोजन के लिए रविवि अधिकृत
- देश 75 स्थानों पर विज्ञान सर्वत्र पूज्यते का आयोजन

■ नवभारत ब्यूरो | रायपुर.

www.navabharat.news

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत भारत सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा 22 से 28 फरवरी तक भारत के 75 विभिन्न स्थानों में विज्ञान सर्वत्र पूज्यते : सभी के लिए विज्ञान का उत्सव नामक



कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है. कुलसचिव प्रो. के. एल. वर्मा ने बताया कि छत्तीसगढ़ से एकमात्र पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए अधिकृत किया है. विवि द्वारा 22-28 फरवरी तक पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में यह आयोजन किया जाएगा. इसमें 75-75 विभिन्न गतिविधियां होंगी. रविवि में चर्चा के

समापन व पुरस्कार वितरण 28 को

28 फरवरी इस आयोजन का वृहद समापन समारोह नई दिल्ली में आयोजित होगा, जिस का प्रसारण सभी 75 जगहों पर एक साथ किया

दौरान प्रो. वर्मा ने बताया कि इस उत्सव के आयोजन के दौरान अंतरराष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिकों/शिक्षाविदों के व्याख्यान, एक्सपो में विज्ञान प्रसार द्वारा तैयार पोस्टरों का प्रदर्शन, पुस्तक मेला, यंत्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, विज्ञान मॉडल बनाने की प्रतियोगिता,

जाएगा, साथ ही रविवि के कार्यक्रम का विधिवत समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया जाएगा.

वैज्ञानिक परिचर्चा, नारा लेखन प्रतियोगिता, वैज्ञानिक नाटक आदि होंगे. 75 एक्सपो, 75 व्याख्यान, 75 फिल्म, 75 रेडियोवार्ता, 75 विज्ञान जागरूकता गतिविधि, 75 पुस्तकें, 75 पोस्टर, 75 अवाइर्स का आयोजन किया जाएगा.

Dr Shyama throws light on Space Science



Dignitaries, guests and students during the lecture session of Science Week Festival. (R) Students explaining the special features of their model to visitors.

■ **Staff Reporter**
RAIPUR, Feb 24

THE third day of science week festival 'Vigyan Sarvatra Pujyate: Festival of SCoPE for All' commenced at Pt Deendayal Upadhyay Auditorium, Raipur on Thursday.

The session commenced with a lecture on 'New World New prospects Space Science Exploration' by Dr Shyama N Scientist SF UR Rao Satellite Centre, ISITE Campus, Bangalore.

In his address, Dr Shyama focused on Space Science. She has discussed Laplace theory, theory of rationale origin of earth, passing star hypothesis, formation of solar system and its application in planetary science. Dr Shyama discussed about the challenges associated with the space instrumentation. The

space instrumentation must be capable enough to tolerate extreme temperature, vacuum, vibration, error-free etc. She fully involved the audience to wonder why space science must be explored and also presented beautiful pictures of celestial bodies like asteroids, comets, planets etc. She also recommended the youth to develop analytical as well as experimental skills to be able to explore the science behind space.

Later in another lecture session, Head Department of Biotechnology, Gurukul Kangri University, Haridwar Professor R C Dubey spoke on 'Making the Future of India through Science'. Professor Dubey highlighted various facts regarding science in our day to day lives. He shed light on Sanskrit and Vedic Microbiology and its relation to human lives since ancient times.

The science behind importance of the 'gangajal' with several health benefits were also discussed by Professor Dubey. He has put stress on integration of Indian knowledge system and its various culture and traditions for human welfare. He urge the youth to work on the practical aspects rather than the theoretical aspects. He termed the 'Vedic rishis' as the traditional scientists of India. Science is the only key for the progress of the country was also discussed by Professor Dubey.

The event continued with Hands on Training-cum-Workshop on Solar Lamp Making by Dr Sanjay Tiwari, Head of the Department, School of Studies in Electronics who spoke on 'Sustainable Development Goals'. He gave a brief introduction about the discovery of Solar energy and a vision to make the

world carbon-free use of fuel by 2050. Speech was further succeeded with a quiz competition round 1 which included 15 questions, each of 30 seconds. Total 64 participants from various schools, colleges or institutes participated.

Next, Hands on Training to make Solar lamp was demonstrated through a video followed by a quiz round 2 conducted with 67 participants. Three top winners of quiz competition round 1 and round 2 were honoured by Vice-Chancellor, Pt Ravishankar Shukla University, Raipur Keshari Lal Verma, Head of the Department, School of Studies in Biotechnology Professor K K Sahu and Head of the Department, School of Studies in Electronics Dr Sanjay Tiwari. The event concluded with students practicing lamp making in the workshop.

PRSU to organise 'Vigyan Sarvatra Pujyate' in CG

■ Staff Reporter

RAIPUR, Feb 15

AS A part of 'Azadi Ka Amrit Mahotsav' celebration, the Government of India is organising a programme 'Vigyan Sarvatra Pujyate: A Festival of SCoPE for All' in 75 locations across the country from February 22, said Vice-Chancellor of Pt Ravishankar Shukla University (PRSU) Professor K L Verma on Tuesday while addressing the media.

"It's a matter for great pride that the Vigyan Prasar organisation of the government has selected Pt Ravishankar Shukla University as an agency to organise this event in Chhattisgarh,"



PRSU's Vice-Chancellor Professor K L Verma detailed to the media about the programme 'Vigyan Sarvatra Pujyate'.

said Verma.

Shedding more details about the programme, Verma said that during celebration of this science festival, lectures of eminent scientists/academicians of international repute will be organ-

ised.

Similarly, 75 posters developed by Vigyan Prasar depicting progression of science in the country and the same numbers of posters depicting the pictures of great Indian scientists along with

a note of their significant contribution will be exhibited all through the day of this event. Moreover, book fair, quiz competition, model making competition, scientific debate, slogan writing competition, poster making/drawing competition, essay writing competition, extempore, scientific skit/drama and other events will be organized.

Winners of each competition will be awarded, he added.

Currently, the university administration is in talks with the scientists of ISRO and DRDO so that they could either address the event offline or virtually to highlight India's growth journey in the field of space research and missile research.



नॉलेज पैंट्स भी नहीं समझ पाते की साइंस क्यों है जरूरी

साइंस को होलिस्टिक पढ़ाना चाहिए यानी 12 वीं तक, तभी सभी समझ सकेंगे

आजादी के 75 वें साल का जश्र महोत्सव के तौर पर मनाया जा रहा है। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय इस महोत्सव को विज्ञान सर्वत्र पूज्यते के तौर पर मना रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत इनोवेटिव एंड साइंटिफिक रिसर्च अकेडमी के डायरेक्टर और वाइस चांसलर प्रोफेसर राजेंद्र सिंह सांगवान ने की। उन्होंने पत्रिका से साइंस को लेकर कुछ जानकारियां भी शेयर की।

सरिता दुबे @ ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

रायपुर: पैंट्स को बहुत कुछ समझने की दरकार है। इसके साथ ही साइंस को अलग-अलग सेक्टर में नहीं बांटना चाहिए जैसे बायलॉजी और मैथ्स, बल्कि एजुकेशन सिस्टम में यह होना चाहिए कि साइंस को पूरी कक्षा तक पढ़ाया जाए। पहली से लेकर 12 वीं तक साइंस पढ़ाया जाए। उसी के बाद च्वाइस करना चाहिए। इसके साथ ही ह्यूमैनिटीज के सब्जेक्ट भी साइंस में होना चाहिए। तभी सभी के अंदर साइंस की समझ विकसित होगी और हम विज्ञान के लिए सकारात्मक कार्य करने के साथ ही उसी दिशा में सोचेंगे, तो मानव जाति अनंत काल तक जीवित रह सकती है।



प्रोफेसर राजेंद्र सिंह सांगवान
(एसीएसआईआर)

टैलेंट की भरमार, मौका मिलने की दरकार

टैलेंट सभी जगह समान होता है सिर्फ मौका मिलने की दरकार रहती है। हमारे ग्रामीण अंचल में भी टैलेंट की कमी नहीं है, लेकिन उन्हें सीखने के मौके नहीं मिल पाते हैं। यदि उन्हें सीखने का मौका मिलेगा याने की ऑपच्युनिटीज ऑफ लर्निंग तो वे भी बहुत कुछ कर सकते हैं और यह तो सत्य है कि विज्ञान सर्वत्र पूज्यते, तो हमें इसे आत्मसात करना होगा।

युवा ला सकते हैं यह बदलाव

प्रो. कहते हैं कि हमारे युवाओं से हमें बहुत उम्मीद है क्योंकि वे ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर बच्चों को साइंस से जोड़ने का काम कर सकते हैं। बहुत सी वीजे हमने बांट ली है कि साइंस सब्जेक्ट के साथ आर्ट्स को नहीं पढ़ा सकते। ऐसा नहीं होना चाहिए। बाहर की यूनिवर्सिटीज में तो ह्यूमैनिटीज साइंस के साथ पढ़ाया जाता है। इससे सामान्य जानकारी बढ़ती है।

जागरुकता के लिए गांवों में कैंप लगाना चाहिए

गांव के क्लस्टर में अवेयरनेस कैंप लगाना चाहिए। जिससे बच्चे जान सीख सकें, कि उन्हें किस दिशा में और कैसे बढ़ना है। इससे बहुत कुछ बदलाव आ सकता है। स्कूल और महाविद्यालय के स्तर पर इस तरह के अवेयरनेस कैंप लगा सकते हैं। हमारे ग्रामीण अंचल के बच्चों को यदि सीखने और जानने का मौका मिलेगा तो वे बदलाव की एक नई शुरुआत कर सकते हैं। ज्ञान का विस्तार और उसके अनुसार अपना जीवन जीना ही विज्ञान कहलाता है। शायद इसी कारण कहा गया है कि विज्ञान सर्वत्र पूज्यते।

शिक्षकों, छात्रों हेतु फोल्ड स्कोप कार्यशाला का आयोजन

नवभारत कार्यालय । महासमुंद।

शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय में जैव प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार एवं बायोटेक्नोलॉजी कंसोसिया इंडिया लिमिटेड न्यू दिल्ली द्वारा छत्तीसगढ़ के आकांक्षी जिले राजनांदगांव, महासमुंद, दंतेवाड़ा, कांकेर, बलरामपुर, नारायणपुर के शिक्षकों और छात्रों के लिए फोल्डस्कोप कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. केसरी लाल वर्मा शामिल हुए तथा व्याख्यान में उन्होंने मचेवा ग्राम एवं दूरस्थ ग्रामीण परिवेश से आ रहे नियमित छात्र-छात्राओं का हौसला बढ़ाया। विशिष्ट अतिथि डॉ. केशव कांत साहू रहे एवं आने वाले प्रशिक्षण शाला में महाविद्यालय की छात्राओं की भूमिका और बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। बीसीआईएल के मैनेजर मनोज कुमार उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पधारे कलेक्टर निलेश कुमार क्षीरसागर ने छात्राओं को जिज्ञासु बनने प्रेरित किया तथा नवोन्मेषी कार्यों में जुड़ने की

सलाह दी। बीसीआईएल मैनेजर विनोद कुमार ने डॉ. मनु प्रकाश फोल्ड स्कोप के जनक भारत सरकार की पहल के प्रमुख उद्देश्य बताया। जिसमें प्रमुख रूप से दूरस्थ अविकसित ग्रामीण परिवेश में मौजूद छात्र-छात्राओं तक विज्ञान के

40 शिक्षकों को बांटे विशेष किट

कम लागत इस्तेमाल में आसान आविष्कारों द्वारा बालिकाओं एवं युवाओं में विज्ञान के प्रचार-प्रसार की इच्छा जताई। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरस्वती वर्मा एवं धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. स्वेतलाना नागर ने प्रस्तुत किया। कार्यशाला के द्वितीय चरण में देशभर के प्रसिद्ध संस्थानों से पधारे 10 ट्रेनर्स विनोद कुमार बीसीआईएल, सुश्री शर्ली चार्ल्स बीसीआईएल, डॉ. अरोकियासामी अरुलांदु इंटरनेशनल सेंटर फॉर जेनेटिक इंजीनियरिंग एंड बायोटेक्नोलॉजी नई दिल्ली, सुश्री अक्षता नायक सिटीजन साइंस फेलो, अर्थवांच इंडिया, सुश्री सुजाता अधाना, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, सुश्री सोनाली कदम,

मो. पंडियाराजन, ईडन साइंस क्लब मदुरै, डॉ. नागार्जुन विजय भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) भोपाल, डॉ. अरुण देव शर्मा लायलपुर खालसा कॉलेज जालंधर ने महासमुंद के विभिन्न शासकीय स्कूलों से पधारे चार सौ छात्राओं को निःशुल्क फोल्डस्कोप उपयोग करने की जानकारी साझा की। इसके अलावा आकांक्षी जिलों से पधारे 40 टीचरों को विशेष किट प्रदान की गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने जिले और स्थानों पर जाकर विज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करना था। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभागी टीचरों को जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शीलभद्र कुमार ने आयोजन समिति के सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया। महासमुंद जिले से पधारे छात्र-छात्राओं ने तालाब के पानी में शैवालों, फोटोजोआ अध्ययन, सड़े टमाटर से राइजोपस, एसपरजिस कवक, पत्तियों में मौजूद स्टोमेटा, जड़ों की संरचना, जू आदि का फोल्डस्कोप से अध्ययन करना सीखा।



पौधों में टैगिंग करते बायोटेक्नोलॉजी विभाग के छात्र एवं प्रोफेसर। ● नईदुनिया

सौ वर्ष पुराने पेड़ों के गुणों की पहचान करने कर रहे टैगिंग

रायपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)। पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय परिसर में लगे पेड़-पौधों की टैगिंग की जा रही है। पहले चरण में 70 प्रकार के 350 पौधों की टैगिंग की जा रही है। चरणबद्ध तरीके से परिसर के सभी पेड़ों की टैगिंग की जाएगी।

बायोटेक्नोलॉजी विभाग के प्रोफेसर एसके जाधव ने बताया कि यहां लगे कई पेड़ सौ वर्ष पुराने हैं। इनके बारे में कुछ लोग ही जानते हैं। टैगिंग करने से सब लोग गुण और प्रजाति को जानने लगेंगे।

पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाया जा रहा है, जिसे स्कैन करने में उससे संबंधित सारी जानकारी मिल जाएगी। टैगिंग के माध्यम से बाटनिकल (वनस्पति) और लोकल नाम लिखा जा रहा है, जिससे आम लोग भी पेड़ों के बारे में जान सकें।

लोग पेड़ों को तो जानते हैं, लेकिन उनके गुण के जानकारी नहीं रहती। टैगिंग से उन्हें यह जानकारी हो जाएगी और वे पेड़ों का सदुपयोग कर सकेंगे। विश्वविद्यालय परिसर में लगभग एक हजार से ज्यादा पेड़-पौधे हैं।

टैगिंग के फायदे

- पौधों की टैगिंग के दौरान उनका बाटनिकल नाम और लोकल नाम लिखा जा रहा है। इसे बाटनिकल नाम की भी जानकारी लोगों को मिल जाएगी। लोकल नाम तो जानते हैं, जिन्हें लोकल नाम पता नहीं होगा, उन्हें भी पता चल जाएगा।
- क्यूआर स्कैन करते ही पौधे के गुण और प्रजाति के बारे में जानकारी मिल जाएगी। साथ ही पौधे के उपयोग के बारे में भी जान सकेंगे।
- पौधों की जानकारी होने के कारण उनका लोग सही सदुपयोग कर सकेंगे।



रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

परिसर में लगे पेड़-पौधों की टैगिंग की जा रही है। पहले चरण में 350 पेड़ों की टैगिंग की गई है। टैगिंग करने की पहल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सच्चिदानंद शुक्ला ने की है। उन्हीं के निर्देशन में टैगिंग की गई है। जो पौधे अभी शेष हैं, उन सब की टैगिंग की जाएगी।

- प्रो. एसके जाधव
बायोटेक्नोलॉजी विभाग